प्रख्यापन

डॉ. लाल के मिथक नाटक

यह लघु शोध प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल. (हिन्दी) के प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिये प्रस्तुत नहीं की गई है।

Mandavgane K.L

वाई (कुसुम लक्ष्मीकांत मांडवगणे).

दिनांक : 28 नवम्बर 1991. शोध छात्रा

डॉ. गजानन शंकर सुर्वे
एम्.ए.,पीएच्.डी.
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा - 415 002. **(महाराष्ट्र)**

स्नातकोत्तर अध्यापक, हिन्दी
शोध निर्देशक, हिन्दी सदस्य,
अभ्यास मण्डल, हिन्दी
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

191-बी, गुरूवार पेठ,
दोशी बिल्डिंग,
सातारा - 415 002
(महाराष्ट्र)
दिनांक: 28 नवम्बर 1991

प्र मा ण प त्र

मैं, डॉ. गजानन शंकर सुर्वे, रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा यह प्रमाणित करता हूँ कि श्रीमती कुसुम लक्ष्मीकांत मांडवगणे ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की **एम्.फिल.(हिन्दी)** उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध **' डॉ.लाल के मिथक नाटक '** मेरे निर्देशन में बडे परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। श्रीमती मांडवगणे के शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

सातारा.
दिनांक : 29 नवम्बर 1991.

(डॉ. गजानन शंकर सुर्वे)
शोध निर्देशक

प्रा क्क थ न

मानवी मन के अंत:स का प्रकटीकरण मिथक के माध्यम से साहित्य में उभरकर आया है, मिथक को उपयोग में लाते समय बिंब, प्रतिमान, प्रतिक, लोककथा आदि कई बातोंका सहारा लेना पडा। मिथक कथाओं में गढ़कर हमारे सामने आया। मिथक कथाएँ मानवजाति इतनीही प्राचीन है। मिथक मानव के बाहय जगत तथा अंतर्जगत में व्याप्त है। मानवी संस्कृति का दस्तावेज ही मिथक है। मिथक तथा साहित्य, मिथक तथा भाषा परस्पर संबंधित तथा अवलंबित है। परंतु 19 वी शताब्दी के पहले मिथक के बारे में कोई लिखित सामग्री नहीं प्राप्त हुई। मिथक का विस्तृत, व्यापक और सूक्ष्म प्रयोग स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में दिखाई पडता है। मिथक का प्रयोग हमारे विद्वानोंसे पहले पाश्चात्योंने किया तथा उसपर अनुसंधान भी किया। आजतक हिंदी साहित्य में मिथक का अनुसंधान कार्य बहुत ही कम मात्रा में हुआ है। अभी यह कार्य और भी होने की आवश्यकता है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में कुल मिलाकर छे अध्याय है। प्रथम अध्याय-मिथक और नाटक के अंतर्गत मिथक का सामान्य महत्व, मिथक शब्दप्रयोग और उसकी परिभाषा लिखकर मिथक की उत्पत्ति और विकास पर विचार किया गया है। मिथक का अन्य बातों से सम्बम्ध में मिथक और समाज, मिथक और मनोविज्ञान, मिथक और इतिहास, मिथक और दर्शन, मिथक और धर्मनिरपेक्षता, मिथक और प्रतिक और बिम्बविधान, मिथक और रूपककथा, मिथक और भाषा, मिथक और साहित्य का परस्पर संबंध, नाटक का अन्य साहित्यिक विधाओंसे पार्थक्य एवं महत्व तथा नाटक में मिथक का प्रयोग आदि मुद्दोंपर विचार-विमर्श तथा आलोचकों के मतोंका उल्लेख किया गया है।

द्वितीय अध्याय - 'डॉ. लाल के मिथक नाटकों की अवधारणा' में डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल की जीवनी, उनके नाटकोंका परिचय, वर्गीकरण और मिथक नाटक से अभिप्राय आदिका विचार करके उन्हे ये मिथक नाटक लिखने की प्रेरणा कैसे मिली इसपर लिखा गया है। मिथक नाटक की कथावस्तु के स्त्रोत इतिहास तथा पुराण के कथानकों में नवीनता का उन्मेष, मिथक नाटकों में मूल कथावस्तु, उसका विस्तार तथा परिवर्तन का ढ़ंग तथा उनके नाटकों की कतिपय विशेषताओं पर एक नजर डाली है। तृतीय अध्याय 'डॉ. लालके मिथक नाटकों की चरित्र सृष्टि में, चरित्र सृष्टि का महत्व, साधारण नाटक तथा मिथक नाटक के चरित्र सृष्टि में अंतर, डॉ. लाल के मिथक नाटकों के पात्र उनका वर्गीकरण तथा विशेषताएँ आदि पर विचार किया गया है।

चतुर्थ अध्याय - 'डॉ. लाल के मिथक नाटकों में आधुनिक युगबोध' के अंतर्गत - आधुनिकता अर्थबोध तथा अर्थविस्तार, आधुनिकता और परंपरा, आधुनिकता और इतिहास बोध, आधुनिकता और नाटक ये बाते विभाग एक में है तो दूसरे विभाग में - परिवर्तिता सामाजिक मूल्य, सृजनीतिक कुटिलता का पर्दाफाश, धार्मिक विश्वास के प्रति नयी दृष्टि, आर्थिक शोषण के प्रति असंतोष तथा नयी नैतिकता के नये प्रतिमान आदि बातों पर विचार किया गया है। पंचम अध्याय 'डॉ. लाल के मिथक नाटकों में रंगमंचीयता' में आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच, रंगमंच का महत्व तथा भारतीय और पाश्चात्य रंगमंच ये बाते पहले विभाग में लिखकर दूसरे विभाग में - दृश्ययोजना, अभिनेयता, रंगमंचकी दृष्टि से पात्रों के क्रियाकलाप, प्रकाशयोजना तथा ध्वनिसंकेत, नाट्यभाषा और संवादयोजना, नाटककार द्वारा दिये गये रंगसंकेत, निर्देशक के विचार तथा पाठकिय एवं दर्शकीय संवेदना आदि बातों पर विचार किया गया है।

प्रबंधकी मौलिकता -

(।) हिंदी नाट्यालोचन में मिथक विषय लेकर बहुत कम लिखा गया है। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध इस अभाव की पूर्ति का एक विनम प्रयास है।

(2) डॉ. लाल के मिथक नाटकों पर कुछ फुटकल लेख जरूर लिखे गये है, लेकिन

समग्रतः मिथक और साहित्य, विशेषतः नाटक का जो अन्योन्य संबंध होता है, उसे परिलक्षित करके डॉ. लाल के मिथक नाटकों का अनुशीलन करने का यह प्रथम प्रयास है।

(3) डॉ. लाल ने अपने मिथक नाटकों में पुराने मिथकों को प्रसंगवश तोड-मरोडकर आधुनिक जीवन सन्दर्भ में व्याख्यायित करने का जो प्रयास किया है, उसको व्यापक और सूक्ष्म रूप में विवेचित-विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

(4) डॉ. लाल के सभी मिथक नाटक मंचीय है और इसी आलेक में डॉ. लाल के मिथक नाटकों की उपलब्धि बतायी गयी है।

(5) अपने विवेचन-विश्लेषण को अधिक स्पष्ट करने की दृष्टि से आवश्यकता के अनुसार मानचित्र-चार्ट आदि का समुचित प्रयोग किया गया है।

कृतज्ञता ज्ञापन -

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का अध्ययन आदरणीय गुरूवर डॉ. गजाजन शंकर सुर्वे, रीडर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के निर्देशन में किया गयां है। अपने व्यस्त जीवनप्रवाह में भी उन्होंने मेरी समय असमय मौलिक सहायता करके मेरा मार्ग सुकर किया है। मैं उनके निजी ग्रंथालय से भी काफी लाभान्वित हुई हूँ। अतः मैं उनकी बहुत्त ही ऋणी हूँ।

प्रस्तुत शोध कार्य में मुझे लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा, किसनवीर महविद्यालय, वाई, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे आदि के ग्रंथालयों से पुस्तकें उपलब्ध हुई इसलिये मैं उन संस्थाओं के पदाधिकारियों की आभारी हूं।

मुझे एम्.फिल. करने की विशेष प्रेरणा मिली है वाई के श्रीमान माणिकचंदजी ओसवाल से। मैं उनकी अत्यंत ऋणी हूं। प्राचार्य आर्. एम्. चिटणीस, प्राचार्य अमरसिंह पा. राणेजी, डॉ. व्यंकटेश कोटबागेजी, डॉ. टी. आर्. पाटीलजी आदि सज्जनों के सहयोग के लिये आभारी हूं।

मेरे परिवार के समस्त सदस्यों का भी मुझे अनमोल सहकार्य प्राप्त हुआ है। मैं उन ग्रंथकर्ताओंकी भी आभारी हूं जिनकी मूल्यवान ग्रंथरचनाओं ने मेरे शोधकार्य में सहायता दी है।

इलेक्ट्रॉनिक टंकलेखन का कार्य सौ. शोभनाजी खिरे, क्वालिटी सायक्लोस्टाईलींग, सातारा ने बड़ी तत्परता से पूरा कर दिया। इसलिये मैं उनकी हृदयसे आभारी हूं।

वाई

दि. 28 नवंबर 1991

Mandvgane K.L.
कुसुम लक्ष्मीकान्त मांडवगणे